बाइबल टीचर

वर्ष 18 फरवरी 2021 अंक 3

सम्पादकीय

पीतल का सांप

यूहन्ना के 3:14-15 में हम पढ़ते हैं, ''और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए।'' यहां यीशु अपने बारे में कह रहा था कि जब वह ऊंचे पर या क्रूस पर चढ़ाया जायेगा तब संसर के लोग उसकी ओर खिचेंगे।

जब हम गिनती की पुस्तक को पढ़ते हैं, वहां हम देखते हैं कि जब इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरूद्ध बात करके पाप किया। तब परमेश्वर ने उनके पाप के लिये उन्हें दण्ड दिया। उसने उनके बीच में तेज विष वाले सांप भेजे जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली मर गए। तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, कि हमने पाप किया है, मूसा से वे लोग कहने लगे कि हमारे लिये प्रार्थना कर कि वह विष वाले सांपों को हमसे दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। यहोवा परमेश्वर ने कहा कि मूसा तू एक सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्बे पर लटका, तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनावाकर खम्बे पर लटकाया, तब सांप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप की ओर देखा वह जीवित बच गया। (गिनती 21:5-9)।

बाइबल बताती है कि सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है। (रोमियों 3:23)। और आगे रोमियों 6:23 में हम पढ़ते हैं कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)।

यहां हम देखते हैं कि उन्हें यह नहीं कहा गया कि आप उस सांप की आराधना करो, या उन सांपों को मार दो, या काटे हुए स्थान पर कुछ लगा लो। परन्तु यह बात उनसे साफ बोल दी गई थी कि उनहें पीतल के सांप को देखना है और यदि डंसा हुआ इंसान उस प्रतिमा को देखेगा वह मरेगा नही। यीशु क्रूस पर लोगों के लिये चढ़ाया गया और जो भी उसके पास आयेगा तथा उसकी आज्ञा को मानेगा वह पापों से बचा जाएगा। वचन में हम पढ़ते हैं कि, ''परमेश्वर ने जगत में ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)। यहां जिस प्रकार के विश्वास की बात हो रही है, वो है आज्ञाकारी विश्वास। आज्ञाकारी विश्वास उद्धार करता है। जब परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि उन्हें उस सांप की ओर देखना है तो यह अवश्य था कि वो ऐसा करें। कोई शायद यह कह सकता था कि हम खम्बे को छू लेते हैं परन्तु इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होता।

कई लोग बहस करके कहते हैं कि परमेश्वर ने इस प्रकार से क्यों आज्ञा दी कि लोग सांप की प्रतिमा को देखें और बच जायें और यही बात आज बहुत से लोग बपतिस्मे के विषय में भी कहते हैं कि बपतिसमा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है, परन्तु वह यह भूल जाते हैं कि यह परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा है जिसका पालन मनुष्य को उद्धार पाने के लिये करना आवश्यक है।

कई लोग शायद यह बहाना लगा कर कह सकते हैं कि यदि कोई बुरी तरह से सांप के काटे जाने के द्वारा प्रतिमा को नहीं देख सकता तो उसका क्या होगा? हमें कभी भी इन प्रश्नों को लेकर परमेश्वर से बहस नहीं करनी चाहिए कि उसने ऐसा क्यों होने दिया। कभी भी लोगों को परमेश्वर की आज्ञा को मानने में बहाने नहीं लगाने चाहिए। यदि उस समय मूसा ने लोगों से कहा था कि सांप वाली पीतल की प्रतिमा को देखना है तो आज भी जो लोग पाप से ग्रस्त हैं, उन्हें यीशु को देखकर उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानना है। (मरकुस 16:16)।

यदि कोई व्यक्ति पानी में डूब गया हैं तो इसका अर्थ है उसे डूबने से बचना है। यदि वह बचना चाहता है तो उसे उस रस्सी को पकड़ना होगा जो उसे बचाने के लिये फेंकी गई है। कई लोग जान-बूझकर रस्सी को पकड़ना नहीं चाहते और बाद में उनकी मृत्यु हो जाती है। और यही बात उनके विषय में है जो यीशु में विश्वास लाकर बपतिस्मा लेना नहीं चाहते। आज विश्वास रूपी रस्सी फेंकी जा रही है परन्तु हजारों लोग जो अपने पापों में खोये हुए हैं उसे पकड़ना नहीं चाहते। सबने पाप किया है और पाप द्वारा डसे जा रहे हैं परन्तु अपनी ज़िद और हट के कारण परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानना चाहते। यदि कोई व्यक्ति अनन्त जीवन को प्राप्त नहीं करता तो वो इसलिये होगा क्योंकि उसने सुसमाचार की आज्ञा को नहीं माना। (गलतियों 3:26-27, प्रेरितों 22:16; और रोमियों 6:3-4)।

जब मूसा को सांप की प्रतिमा बनाने की आज्ञा दी गई तो उसने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। आज परमेश्वर ने हमसे यानि मसीहीयों से कहा है कि मेरा सुसमाचार लोगों को दो और जब हम उसकी आज्ञा को मानकर उसका प्रचार करते हैं, तो हमने अपने कर्त्तव्य को निभाया है। (मत्ती 28:18, 19; मरकुस 16:15-16)। सुसमाचार को जानने के बाद भी यदि कोई पाप से बचना नहीं चाहता तो यह उसकी गलती है। यदि वह खोया हुआ है तो वह अपने पाप के कारण है। इसमें आपका और परमेश्वर का कोई दोष नहीं है। एक मसीही की यह पूरी जिम्मेवारी है कि वह दूसरों को सुसमाचार सुनाये। यदि आप दूसरों की आत्माओं को पाप से बचाना चाहते हैं तो उन्हें सुसमाचार सुनायें।

बाइबल हमें बताती है कि जो लोग सुसमाचार को नहीं मानते उनसे प्रभु पलटा लेगा। प्रेरित पौलुस ने लिखा था, "और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्स 1:8) यदि हम अपनी आत्मा के बारे में नहीं सोचते तथा अपने पापों में अभी भी है, तब यह परमेश्वर की जिम्मेवारी नहीं है। उसने हमे पाप से बचने का तरीका बता दिया है। परमेश्वर हमें कई बार अवसर देता है परन्तु हम उनका लाभ नहीं उठाते। आज परमेश्वर चाहता है कि हम क्रूस पर चढ़े हुए यीशु की ओर देखें और उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानें। सांप द्वारा डसे गये जिस व्यक्ति ने भी खम्बे पर लटकी हुई प्रतिमा को देखा था, वो चंगा हो गया था।

अद्भुत शांति

सनी डेविड

शांति इस पृथ्वी पर किसी भी भाषा में एक बड़ा ही विचित्र तथा सुखदायक शब्द है। यह शब्द फूट, विरोध, झगड़े और कलह के बिल्कुल विपरीत है। जब प्रभु यीशु मनुष्य के उद्धार के काम को समाप्त करके स्वर्ग में वापस जा रहा था, तो उसने अपने चेलों से कहा, "मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूं, अपनी शांति तुम्हें देता हूं।" (यूहन्ना 14:27) और वास्तव में, प्रभु की अद्भुत शांति उसके चेलों के जीवनों में हमें स्पष्ट दिखाई देती है। जिस तरह के हौंसले तथा साहस के साथ उन्होंने सब प्रकार के अत्याचारों या कठिनाइयों का सामन किया उसका भेद प्रभु की अद्भुत शांति के सिवाए और कुछ न था। उन में से बहुतों को पत्थरवाह करके मार डाला गया, वे आरो में जीवित चीरे गए, कुछ को जिंदा आग में डालकर भस्म कर दिया गया, वे जंगली खूंखार जानवरों की मांदों में फेंके गए; और हर प्रकार के अत्याचारों वा कठिनाइयों का सामना उन्हें करना पड़ा परन्तु प्रभु की अद्भुत शांति जो उनके मनों में थी वह बड़ी ही महान थी। उनके विश्वास तथा जीवन में एक बड़ी दृढ़ता थी, उनके मनों में न तो कोई डर था न घबराहट। उनके पास एक अदभुत शांति थी।

एक जगह पवित्र शास्त्र का लेखक कहता है, तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शांति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।" (भजन 119: 165) यह सिद्धांत वास्तव में बड़ा ही सच्चा है। वास्तविक शांति अर्थात आत्मशांति मनुष्य को केवल परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलकर ही प्राप्त हो सकती है। आज संसार में शांति की स्थापना के लिये बड़े-बड़े सम्मेलन हो रहे है, बड़ी बड़ी वार्ताएं हो रही हैं, परन्तु जिस शांति की मनुष्य को वास्तव में आवश्यकता है वह उसे संसार नहीं दे सकता। क्योंकि संसार की वस्तुओं से मनुष्य को कुछ समय का आनन्द तो अवश्य प्राप्त हो सकता है परन्तु आत्म-शांति नहीं मिल सकती।

जिस तरह की शांति परमेश्वर की इच्छा पर चलकर प्राप्त होती है, उसे हम पतरस के जीवन में साक्षात देखते है। उन दिनों में जब हेरोदेस राजा ने याकूब नाम के प्रभु के एक चेले को तलवार से मरवा डाला, और जब उसने देखा कि इस बात से यहूदी लोग बड़े प्रसन्न हुए, और वे उसकी प्रशंसा करने लगे, तो उसने पतरस को भी पकड़वाकर इस विचार से बन्दीगृह में डाल दिया कि उसे भी यहूदियों के सामने लाकर मरवा डाले। और हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर प्रार्थना कर रही थी। और जब हेरोदेस उसे उनके सामने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था, और पहरूए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत था खड़ा हुआ, और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मारकर उसे जगाया, और कहा, उठ फुरती कर, और उसके हाथों से जंजीरें खुलकर गिर पड़ी। तब स्वर्गदूत ने उससे कहा; कमर बांध, और अपने जूते पहिन ले, उसने वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा; अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले।" (प्रेरितों 12:5-8)।

इस वर्णन में हमें कितनी अदभुत शांति दीख पड़ती है। पतरस बन्दीगृह में जंजीरों से

बंधा हुआ, चारों ओर सिपाहियों से घिरा हुआ था। दूसरे दिन सवेरा होते ही, उसे कदाचित मृत्यु दण्ड मिलने वाला था। परन्तु पतरस, जंजीरों से बंधा हुआ सिपाहियों के बीच में चैन से सो रहा था। उसे तलवार और मृत्यु का कुछ भय न था, क्योंकि वह जानता था कि जिसके कारण वह बन्दीगृह में बंद था, उसके कारण यदि वह मर भी जाए तो भी वह जीवित रहेगा। कितनी बड़ी अदभुत शांति हम इस वर्णन में देखते है। यहां तक, कि स्वर्गदूत उस कोठरी में आ खड़ा हुआ, और वहां बड़ी ज्योति चमकी, परन्तु पतरस संकट से घिरा हुआ चैन से गहरी नींद सो रहा था। उसे कुछ पता न चला। और हम देखते है, कि स्वर्गदूत को उसे हाथ मारकर हिला-हिलाकर जगाना पड़ा, परन्तु वह उठ बैठा तो भी नींद में खोया हुआ था। और स्वर्गदूत ने उसे कहा, उठकर खड़ा हो और फुरती कर, परन्तु पतरस अभी तक भी अपनी चैन की नींद के दायरे से बाहर न निकला था, उसे कदाचित किसी भी बात की कोई चिंता न थी। और स्वर्गदूत को उस से फिर कहना पड़ा, कि अपनी कमर बांध जूते पहिन और मेरे पीछे हो ले। कितनी अजीब शांति इस मनुष्य के जीवन में हम देखते हैं। यह वह शांति थी जिनके बारे में प्रभु ने कहा था, कि मैं अपनी शांति तुम्हें दिए जाता हूं।

आज इस तरह की शांति की हमें कितनी बड़ी आवश्यकता है। जबकि संसार में नाना प्रकार के दुख और संकट है; कठिनाइयां और अभाव है; भय ने संसार को अपने शक्तिशाली पंजों में जकड़ रखा है; हजारों जिंदगियां दुख और संकट के तूफानों से टकरा-टकरा कर नाकाम बन चुकी है; अनेकों लोग अपनी समस्याओं से तंग आकर आत्महत्या जैसे काम करने पर विवश हो रहे है। यह सब इस बात को दर्शाता है कि लोगों के पास सच्ची शांति नहीं है, उनके पास आत्म शांति नहीं है; क्योंकि वे जीवन में आने वाले प्रत्येक छोटे-छोटे तूफानों से घबरा उठते है। एक जगह हम देखते हैं कि एक बार जब यीशु अपने चेलों के साथ नाव में बैठकर यात्रा कर रहा था, और लिखा है कि एकाएक "तब बड़ी आंधी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगी, कि वह अब पानी से भर जाती थी। और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा; हे गुरू, क्या तुझे चिंता नहीं, कि हम नाश हुए जाते है? तब उसने उठकर आंधी को डांटा, और पानी से कहा; "शांत रह, थम जा" और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। और उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?" (मरकुस 4:37-40) यहां हम देखते हैं कि वे प्रभु के साथ यात्रा कर रहे थे, परन्तु तौभी तूफान की प्रचण्ड लहरों को देखकर वे अत्यंत डर गए और कहने लगे कि हम नाश हुए जाते है। परन्तु यीशु ने उठकर उस तूफान को शांत किया, और उनसे कहा, कि तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अभी तक विश्वास नहीं? वह उन्हें दिखाना चाहता था, कि वे इस बात का अनुभव करें कि यदि वे उसके साथ हैं तो उन्हें किसी भी तरह के संकट से डरने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह हर प्रकार के तूफान को शांत करने की सामर्थ रखता है।

क्या आपके जीवन में भी कई तूफान है? क्या आप अपनी समस्याओं से परेशान है? क्या आप अपने मन में शांति प्राप्त करना चाहते है? क्या आप आत्म शांति की खोज में है? आपकी आवश्कता यह है कि आप प्रभु यीशु के पास आए और उसमें उस शांति को प्राप्त करें जो समझ से परे है। उसने कहा कि मेरी इच्छा है, कि तुम्हें मुझ में शांति मिले; संसार में तुम्हें कलेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो मैंने संसार को जीत लिया है।" (यूहन्ना 16:33) वास्तव में हमारे सामने ऐसा कोई संकट या समस्या नहीं आती जिसका सामना स्वयं प्रभु यीशु ने संसार में रहकर न किया हो। वह कई दिनों तक भूखा और प्यासा रहा; उसे वस्त्रों का

अभाव था; उसके पास रहने को अपना कोई घर न था; उसके पास आवश्यक वस्तुओं को भी मोल लेने तक को धन न था; वह नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ा; लोग उससे घृणा करते थे, वे उसे तुच्छ समझते थे; वे उसका हंसी व ठट्ठा करते थे, उसे गाली देते थे, उस पर झूठे दोष लगाकर उसे सताते थे। परन्तु उसके बारे में लिखा है, "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था।" (1 पतरस 2:22, 23) 'वरन सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों 4:15) और इस कारण लिखा है, "क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है।" (इब्रानियों 2:18)। अर्थात, ऐसा कोई दुख वा संकट नहीं है जो हम पर आता है और जिसमें से होकर वह स्वयं न निकला, परन्तु जैसा कि उसने धीरज के साथ उनका सामना किया, और उन पर विजय प्राप्त की, वैसे ही उसके द्वारा हम भी जीवन के प्रत्येक तूफान पर जीत हासिल कर सकते है।

और इसलिये, वह हम सबको यह कहकर बुलाता है, "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।' (मत्ती 11:28-30)।

यदि आप प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानकर उसमें विश्वास करेंगे, और अपने पापों से मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे; तो वह आपके प्रत्येक पाप को क्षमा करेगा। (मरकुस 16:16; रोमियों 10:9,10; प्रेरितों 2:38)। और यदि आप प्रतिदिन उसकी आज्ञाओं पर चलेंगे तो वह जीवन भर आपकी अगुवाई करेगा, और आपको अपनी वह शांति देगा जो समझ से बिल्कुल परे है। परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको शक्ति दे।

पाप क्या करता है

जे. सी. चोट

इस पाठ में हम देखना चाहेंगे कि पाप क्या है? पाप की परिभाषा बाइबल हमें बताती है कि पाप परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करना है। उसकी आज्ञा को न मानना ही पाप है। (1यूहन्ना 3:4)।

आज संसार में पाप को बड़े ही हल्के तरीके से लिया जाता है। लोग बुरे, काम करने के बाद भी ऐसा सोचते हैं कि इस बात में मैं कोई बुराई नहीं समझता जब बुरे काम का बुरा नतीजा सामने आता है। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि पाप दुनिया में नहीं है। ऐसा नहीं है पाप है और रहेगा क्योंकि कई बार मनुष्य बुरा ही सोचता है। मनुष्य पाप को पाप नहीं कहना चाहता। केवल मन में सोच लेने से हम पाप को ठीक नहीं कह सकते।

कई लोग अपराध करके सोचते हैं कि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया यानि वे चाहते हैं कि हमारा पाप छिपा रहे। आज इस संसार में बहुत से गलत कार्य हो रहे है परन्तु लोग उससे खुश होते हैं क्योंकि उनका विवेक कठोर हो चुका है। सिनेमा इत्यादि ने मनुष्य के मन को कठोर और बुरा बना दिया है।

पाप शैतान की ओर से है। प्रेरित यूहन्ना ने कहा था, "जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरंभ से पाप करता आया है, परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करें" (1 यूहन्ना 3:8)। इसके बाद प्रेरित कहता है, सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा भी पाप है, जिसका फल मृत्यु नहीं। (1 यूहन्ना 5:17)।

अब हमें यह बात समझनी चाहिए कि यदि हम पाप के परिणाम को भुगतने जा रहे हैं, शायद शारीरिक रूप में तथा आत्मिक रूप से भी और हम मन नहीं फिराते तब हमारे लिये यह बहुत बुरी बात होगी। कई बार हमें पाप के कारण, शारीरिक रूप से बहुत दुख उठाना पड़ता है। कई बार लोग अपराध के कारण पकड़े जाते है और फिर उन्हें इसका दण्ड भुगतना पड़ता है और जेल भी जाना पड़ता है। शायद वह व्यक्ति मन भी फिरा ले परन्तु पाप का दण्ड तो कईबार शारीरिक रूप से भुगतना पड़ता है। प्रेरित पौलुस ने एक बहुत अच्छी बात बोली थी, धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उडाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। आगे 8 पद में वह कहता है, क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोया है वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा, और जो आत्मा के लिये बोता है वह आत्मा, के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा, बाद में वह कुलु. 3:25 में कहता है, "क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा, वहां किसी का पश्चात नहीं। मनुष्य शायद बच जाये गलती के बाद पकड़ा भी न जाए। परन्तु परमेश्वर से नहीं बच सकता। चाहे शारीरिक रूप से या आत्मिक रूप से जो भी व्यक्ति परमेश्वर के नियम को तोड़ता है उसे दाम चुकाना पड़ता है। बाइबल हमें यह बताती है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)।

बाइबल में लिखा है कि एक दिन हम सब अपने कामों का लेखा देंगे। (रोमियों 14:12) और यह भी लिखा है कि एक दिन हम सब मसीह के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे। (2 कुरि. 5:10)। एक दिन हम सब का न्याय होगा। यीशु मसीह में हमें एक आशा है कि हमारे पाप यीशु के लोहू में धुल जाते हैं। जो लोग पापों में मरे जाते हैं तथा मन नहीं फिराते वे अनन्तकाल का दण्ड भोगेंगे।

आप शायद जानना चाहें कि ऐसा कोई तरीका है या मार्ग है जिसके द्वारा मेरे पाप क्षमा हो जाये। हां, परमेश्वर ने एक मार्ग दिया है और वह है प्रभु यीशु और उसका बलिदान। वह मनुष्य का उद्धारकर्ता है। सारे संसार के लिये यीशु ने अपने आपको क्रूस पर बलिदान कर दिया। यीशु ने अपना लोहू इसलिये बहाया ताकि पापियों के पाप उसके लोहू के द्वारा धोये जा सके। (मत्ती 26:28)। पौलुस ने इस प्रकार से कहा था कि "हम को उसके लोहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। (इफि. 1:7)।

इस सबसे यह अर्थ निकलता है कि यीशु ने मनुष्य को पापों से बचाने के लिये संभव मार्ग बना दिया है। परन्तु पापों से छुटकारा पाने के लिये उसे यीशु के पास आना तथा उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है। यदि हम उसमें विश्वास नहीं करते तो अपने पापों में नाश होंगे। (यूहन्ना 8:24)। यीशु ने हमसे यह भी कहा है कि हम अपने पापों से मन फिराएं। पतरस ने भी लोगों से मन फिराने के लिये कहा था। (प्रेरितों 2:38)। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक स्थान पर लोग अपना मन फिराए। (2 पतरस 3:9)। पौलुस ने भी यही बात कही थी (प्रेरितों 17:30)। फिर यीशु चाहता है कि मनुष्यों के सामने हम यह अंगीकार करे कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 10:32) उद्धार के लिये अंगीकार करना आवश्यक है। (रोमियों 10:10)।

और फिर प्रभु ने आज्ञा दी है कि पापों से उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना है। (मरकुस 16:16)। पौलुस को अपने पाप धोने के लिये बपतिस्मा लेने के लिये कहा गया था। (प्रेरितों 22:16)।

अब जब एक व्यक्ति प्रभु की आज्ञा को मान लेता है तब क्या होता है? बाइबल बताती है कि प्रभु उसे अपनी कलीसिया में मिला देता है (प्रेरितों 2:47)। जब कोई एक मसीही बन जाता है तब उसे विश्वास योग्य बनकर रहना चाहिए। अपने आपको पाप से बचाकर रखना है। एक पापरहित जीवन बिताना कठिन होता है। परन्तु एक मसीही अपना पूरा प्रयत्न करता है ताकि अपने आपको पाप से बचाकर रखें। एक मसीही परमेश्वर की ज्योति में चलता है। यूहन्ना लिखता है, ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' (1 यूहन्ना 1:7)। हम पाप की दुनिया से घिरे हुए है, इसलिये हमें पाप से बचना है क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। यीशु आपके लिये क्रूस पर मारा गया, कब्र में गाड़ा गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा और यह पापी संसार के लिये सुसमाचार है। (1 कुरि. 15:1-4)।

स्त्री की भूमिका क्या है?

बैटी बर्टन चोट

कलीसिया में

कलीसिया में स्त्री की क्या-क्या जिम्मेदारियां हैं? एक पूर्ण के दो आधे आधे भाग होते हैं।

पुरुषों का काम वचन का अध्ययन करने के लिए अपने आपको समर्पित करते हुए सार्वजनिक लीडरशिप और शिक्षा देना है ताकि वे कलीसिया को भटकने न दें। पुरुषों में से सुसमाचार सुनाने वाले (इवैंजलिस्ट), सिखाने वाले (टीचर), प्राचीन (ऐल्डर) और डीकन तैयार किए जाने आवश्यक है, ताकि पूरी कलीसिया के इक्ट्ठा होने पर उसकी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इब्रानियों 13:17 में लिखा है, "अपने अगुओं की मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा!"

इन अगुओं का काम ऐसे लोगों की तलाश करते हुए जो परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के इच्छुक हैं, उन्हें सिखाने का काम करना है। उनका काम कलीसिया को सुसमाचार प्रचार तथा परोपकार के कामों में अगुआई देना है। इन अगुओं का काम कलीसिया के सारे कामकाज में अगुआई देना भी है जो उन परिवारों की आत्मिक आवश्यकताओं का ध्यान रखती है जो इसके सदस्य हैं, जो संसार के अन्य भागों में भी सुसमाचार लेकर जाती है। फिर पुरुषों का काम कलीसिया की आराधना सेवाओं में, प्रचार करने में, मण्डली में प्रार्थना करने में, गाने में अगुआई करने आदि का भी है।

स्त्रियां कलीसिया में क्या कर सकती है? पहले तो यह बहुत आवश्यक है कि वे प्रभु के प्रत्येक दिन आराधना के लिए शेष कलीसिया के साथ इक्ट्ठा होने की अपनी जिम्मेदारी को समझें। कई बार स्त्रियां या उनके पति यह निर्णय लेते हैं कि बच्चों को आराधना में साथ लेकर जाना बहुत ही कठिन है जिस कारण पति अकेला चला जाता है। क्या हमारे प्रभु के

लिए स्वर्ग इतनी दूर था कि वह चल नहीं सकता था या क्या क्रूस की मृत्यु उसके लिए बहुत कठिन थी? यदि उसने हमारे लिए इतना कुछ किया है तो हम उसकी किसी बात को कैसे कह सकते हैं कि यह तो बहुत बड़ा कठिन काम है जो मेरे से नहीं हो पाएगा। ऐसे बेकार और दुष्ट बहाने बनाकर आराधना में जाने से बचने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक धिक्कार है। परमेश्वर हम से वह करने को नहीं कह रहा है जो हम कर नहीं सकते। मसीही स्त्रियों के लिए अपने बच्चों को साथ लेकर कलीसिया की हर आराधना में, अपने पतियों के साथ जाना आवश्यक है ताकि वे सीख सकें कि चाहे जो भी हो जाए हम हर हाल में परमेश्वर को पहला स्थान देंगे। हमें पूर्ण रूप में वह केवल तभी आशीष दे सकता है।

कई स्त्रियां कई बार आराधना में जाना आवश्यक नहीं समझती। कोई भी कलीसिया तब तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक उसमें मजबूत आत्मिक स्त्रियां न हो, सो स्त्रियों को पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने के लिए अपने आपको समर्पित करना आवश्यक है। इससे वे परमेश्वर का भय मानने वाली पत्नियां और माताएं बन सकेंगी, परमेश्वर के वचन की सच्चाई दूसरों को दे सकेंगी। पुरुषों की बाइबल क्लासों के अलावा, स्त्रियों और बच्चों के लिए अलग से क्लास का प्रबंध भी होना चाहिए। उन्हें उन मसीही स्त्रियों के द्वारा सिखाया जा सकता है जिन्होंने अपने आपको शिक्षकों के रूप में विकसित करके तैयार किया है।

जब किसी स्त्री को एक शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता है तो उसे वचन का अच्छी तरह से अध्ययन करके अपने नोट्स या अन्य सहायक सामग्री से जो उसने तैयार की है, बाइबल क्लास के लिए बड़े ध्यान से, पहले से तैयारी कर लेनी चाहिए। उसे ध्यान रखना आवश्यक है कि जो कुछ वह कर रही है वह बहुत महत्वपूर्ण है, ऐसा नहीं है कि ऐसा करके वह केवल समय का सदुपयोग कर रही है या बच्चों को चुप करा रही है ताकि उनके माता-पिता का ध्यान वचन को सीखने के लिए इधर उधर न भटके। हमारे पास अपने बच्चों को उनके उद्धार के लिए आवश्यक सच्चाइयां बताने के लिए केवल कुछ वर्ष ही होते हैं, इसलिये सिखाने का हर अवसर अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

स्त्रियों के लिए मण्डलियों के पुरुषों की अगुआई में आराधना के अलग-अलग भागों में भाग लेना, गाना, अध्ययन करना, प्रार्थना करना यदि सप्ताह के दौरान उन्होंने कुछ काम करके कमाई की है तो उसमें से देना, और प्रभु के भोज में भाग लेकर उसकी मृत्यु को स्मरण करना भी आवश्यक है। वे प्रार्थना भवन की साफ सफाई करके तथा धुलाई करके यदि वहां कोई बगीचा है तो उसकी घास आदि काटकर और आराधना स्थल की सम्भाल के लिए जो भी हो सके उसमें सहायता करके आराधना की तैयारी में सहायता कर सकती हैं। यदि कोई प्रार्थना भवन गंदा है और उसकी सफाई नहीं की जाती तो चीख चीख कर संसार को यह बताया जा रहा है कि वहां पर आराधना करने वाले लोगों को परमेश्वर के लिए उचित आदर सम्मान दिखाने की कोई परवाह नहीं है। आराधना के स्थान से पता चलना चाहिए कि हमारे मन में चर्च भवन के लिए कितना प्रेम और भक्तिभाव है। निश्चय ही उसकी देखभाल वैसे ही की जानी चाहिए जैसे हम अपने घरों की करते हैं। कलीसिया की स्त्रीयों को इसके बारे में सोचना चाहिए।

आमतौर पर मसीही लोगों को मूर्तियों को मानने वाले उन लोगों द्वारा लज्जित किया जाता है जो अपने मंदिरों को बनाने या उन्हें संवारने में बहुत दान देते हैं। मसीही लोगों को भवन बनाने में सहायता के लिए, इसके रंग रोगन के लिए या कोई और मरम्मत के लिए विशेष

योगदान देने हेतु पैसा देना चाहिए। उनमें गीतों की नई किताबें, या नई बाइबलें या मेज को ढकने के लिए नया कपड़ा लेने के लिए पैसे देने की इच्छा हो सकती है। प्रार्थना भवन की मरम्मत में बहुत सी बातें हो सकती है। अफसोस की बात है कि मसीही लोग इन बातों पर ध्यान नहीं देते। जो कार्य वे कर सकते हैं, जिससे वे परमेश्वर के लिए अपने जोश और प्रेम को दिखाएं।

स्त्रियां प्रभु भोज के लिए रोटी और दाख का रस तैयार कर सकती है। बिना यादगारी भोज के आराधना पूरी नहीं होती। पुरुष जहां मण्डली की सेवा में अगुआई करते हैं वहां पर स्त्रियां थाली और कटोरों को साफ करके उन्हें तैयार कर सकती है। वे रोटी बनाने की आशीष को पा सकती हैं ताकि यादगारी की रोटी को हर सप्ताह मसीही लोगों के स्नेही हाथों से ताजा बनाया जाए न कि उपेक्षापूर्वक बाहर से खरीदा जाए। रोटी बनाने के लिए आटा, तेल, पानी और नमक आवश्यक है। एक रोटी बनाने के लिए आधा कप मैदा, दो चम्मच तेल, दो चम्मच पानी और थोड़ा सा नमक चाहिए होता है। इसे गूंधना नहीं चाहिए बल्कि इतना सा मिलाना चाहिए जिससे पेड़ा बनाकर उसे बेलकर उसकी पतली-सी रोटी बनाई जा सके। फिर इसे तवे पर या गैस या ऑवन में पकाया जा सकता है। बार-बार बनाते रहने से अच्छी रोटी बनाना सीखा जा सकता है। गैस या अंगीठी पर तवा रखकर असानी से यह रोटी बनाई जा सकती है।

समाज में

पहली सदी में स्त्रियों को इस ढंग से जीवन जीने की चेतावनी दी जाती थी ताकि वे कलीसिया की बदनामी का कारण न बनें। (1 तीमुथियुस 5:14; तीतुस 2:5)। हम अपने आपको अपने आस-पास के समाज से अलग नहीं कर सकते, और संसार में हमारा काम सुसमाचार का प्रकाश बनना आवश्यक है। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियां भी जगत की ज्योति है (मत्ती 5:14) और यीशु उनके अन्दर वास करता है (2 कुरिन्थियों 5:19. 20)। उन्हें अपने मित्रों और पड़ोसियों के साथ संबंधों में भक्तिपूर्ण ढंग से व्यवहार करते हुए हर बात में सचेत करना आवश्यक है। इस प्रकार से दिन प्रतिदिन वे अविश्वासियों को मसीही मूल्यों, नैतिकताओं तथा व्यवहार की शिक्षा दे सकती है।

परन्तु स्त्रियां बोलकर भी शिक्षा दे सकती है। वे अपने पड़ोसियों के घरों में जाकर बाइबल सिखाने के अवसर ढूंढ सकती है। शायद वे अपने आस-पड़ोस की अन्य महिलाओं को सप्ताह में किसी दिन सुबह या शाम चाय या काफी पिलाने और मिलकर वचन में से अध्ययन करने के लिए इकट्ठे होने को प्रोत्साहित कर सकती है।

स्त्रियां दूसरों को आराधना सेवाओं में भी बुला सकती है। बहुत से लोगों को परमेश्वर के लिए इसलिए जीता गया है क्योंकि कुछ महिलाओं ने अपने आस-पड़ोस के बच्चों को, अपने बच्चों के साथ जाने, बाइबल क्लास में भाग लेने और परमेश्वर के बारे में जानने के लिए बुलाया था।

स्वर्ग से आया मुक्तिदाता

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो एक बड़े ही गहरे गड्ढ़े में गिरा पड़ा है। वोह स्वयं बाहर

नहीं आ सकता। उसे किसी की आवश्यकता है, जो उसकी सहायता करके उसे ऊपर खींच ले। उसे आवश्यकता है कि कोई उसके पास एक रस्सी या सीढ़ी को लटकाए। उसे एक बचानेवाले की ज़रूरत है। ऐसे ही, इनसान पाप के गड्ढे में है। उसे ऊपर से अर्थात स्वर्ग से सहायता की आवश्यकता है। हमारे महान परमेश्वर ने हमें एक मुक्तिदाता को दिया है। परमेश्वर केवल एक ही है (व्यवस्था. 6:4; मरकुस 12:29,32; 1 कुरि. 8:4,6; इफि. 6:6; याकूब 2:19)। बाइबल में उस एक परमेश्वर को पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के रूप में दर्शाया गया है। (मत्ती 28:19; 2 कुरि. 13:14; यूहन्ना 15:26)। परमेश्वर को "पिता" कहकर बुलाने का तात्पर्य इस बात से है कि वोह हमारी चिन्ता करता है और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। (मत्ती 6:9; 7:9-11)। यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, इसका तात्पर्य इस बात से है, कि जैसे कि एक पुत्र अपने पिता की आज्ञा को मानता है, उसी तरह से यीशु मसीह ने भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके अपने आपको सारी मानवता के पापों के लिये बलिदान कर दिया था। (यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38) पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं। वे तीनों एक ही हैं। एक ही परमेश्वर है।

इसका अर्थ यह है, कि मुक्तिदाता यीशु का अस्तित्व पृथ्वी पर उसके जन्म लेने से ही आरम्भ नहीं हुआ था, पर वोह आरम्भ से ही विद्यमान था। (यूहन्ना 8:58)। वोह जगत की उत्पत्ति से पहले भी विद्यमान था। (यूहन्ना 1:3; कुलु. 1:15,16, इब्रानियों 1:2)। वोह सदा से ही विद्यमान है। (यूहन्ना 3:13; 8:23; 17:5,24; 18:37)। वोह था, और वोह है, और वोह हमेशा रहेगा। (प्रकाशित 1:8; 17; 21:6; 22:13; यूहन्ना 1:1; इब्रा. 13:8) यद्यपि कि वोह सदा से ही स्वर्ग में था, तौभी वोह पृथ्वी पर आ गया था, ताकि मनुष्य को उसके द्वारा पाप से मुक्ति मिल जाए। (2 कुरि. 8:9)। प्रभु यीशु मसीह के मुक्ति के सुसमाचार का वर्णन पौलुस ने इन शब्दों में किया था: "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया।" (फिलिप्पियों 2:6-7)।

मनुष्य को पाप से मुक्ति पाने की आवश्यकता थी। और यह जानते हुए कि मनुष्य स्वयं अपने आप को पाप से मुक्त नहीं करा सकता, परमेश्वर ने यीशु मसीह को अपने पुत्र के रूप में, मानवता का पाप से उद्धार करने के लिये संसार में भेज दिया था। (यूहन्ना 3:16)। इसी को बाइबल में "सुसमाचार" कहा गया है। (मरकुस 1:1; 16:15; रोमियों 1:16; इफि. 1:13; 1 तीमु. 1:11)। अर्थात् यह अच्छा समाचार है। क्योंकि अब हमारे पास पाप से छुटकारा पाने का उपाय है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर इसलिये भेजा है ताकि हम उसके द्वारा उद्धार पाएँ।

शरीर और आत्मा की जीवनशैलियां, जो वैवाहिक जीवन को बनाती या तोड़ती है

(गलातियों 5:16-26)

कोय रोपर

हम तूफानों, भूकम्पों और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली भयंकर तबाही की बात से भयभीत हो उठते हैं। पर एक तबाही, जो शायद उतनी ही खतरनाक है, जो दशकों से घरों

का विनाश कर रही है, वो है घर का टूटना।

अमेरिका में शायद 40 प्रतिशत विवाह विनाशकारी परिणामों के साथ तलाक में खत्म हो जाते हैं। कई दम्पत्ति एक छत के नीचे रहते तो हैं पर वे खुश नहीं है। कई तो शायद बच्चों के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी को निभा रहे हैं। कुछ को विवाह में अपने संबंध का दोनों में से किसी भी साथी को आनन्द नहीं मिलता।

क्या इस समस्या का कोई इलाज है? लगता नहीं कि इसका इलाज मनुष्य के पास हो। इसके लिए आवश्यकता ईश्वरीय हस्तक्षेप की ही है। घर पर इस अध्ययन का थीसिस वास्तव में वही है। यदि हम खुशहाल अर्थात सफ़ल परिवार चाहते हैं तो हमें ऊपर वाले से सहायता, विशेषकर बल की आवश्यकता है। हमारा अध्याय गलातियों 5:16-26 के अध्याय पर है-

पर मैं कहता हूँ आत्मा के अनुसार, चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक-दूसरे के विरोधी है, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन रहो। शरीर के काम तो प्रगट हैं अर्थात व्यभिचार गंदे काम, लुचपन, मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध फूट विधर्म डाह मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके ऐसे और काम हैं इनके विषय में तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है, ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक-दूसरे को छेड़ें, और न एक-दूसरे से डाह करें।

हमारी मुख्य बात को इस प्रकार से कहा जा सकता है कि घर के लोग जैसे पिता, माता और बच्चों को पवित्र आत्मा द्वारा चलाया जाए, जिससे वे आत्मा का फल दें, तो घर न केवल परिवार को बल्कि परमेश्वर को भी भाने वाला होगा।

सफल घर से हमारा क्या अभिप्राय है? अपने उद्देश्यो के लिए घर की परिभाषा हम चार मापदण्डों को पूरा करने के रूप में करेंगे। (1) यह घर परमेश्वर को भाता है (2) पति-पत्नी जब तक दोनों जीवित है, एक-दूसरे से विवाहित रहते हैं, और कोई तलाक नहीं होता (3) यह एक धन्य घर है, जिसमें परिवार के सदस्य को प्रसन्नता, संतुष्टि और आत्म संतुष्टि मिलती है। (कई दम्पत्ति तलाक से बचते हैं पर उनके विवाह तनाव में रहते हैं। हमारी परिभाषा के अनुसार उनके घर वास्तव में सफल नहीं है) (4) मसीहियत हमारे तरिवार से ही रोशन होती है।

यह साफ़ परिभाषा है। जो इस श्रृंखला के पाठकों को हर किसी के घर के लिए प्रासंगिकता बना देती है। कुछ परिवार तलाक से हो या मृत्यु से, पहले ही टूटे हुए हैं, अन्य घरों में केवल एक व्यक्ति जीवित है। ऐसे मामलों में तलाक से बचने के ढंग और विवाह के साथी के साथ कम से कम थोड़ी देर के लिए प्रसन्न रहने के सुझाव अप्रासंगिक है, परन्तु घर परमेश्वर को कैसे भा सकता है और मसीहीयत को फैलाने का केन्द्र कैसे बन सकता है? कोई चाहे अकेला हो, नवविवाहित या तालकशुदा, बड़े हो चुके बच्चों के साथ जो घर से दूर रह रहे हैं, विवाहित या अपने पति या अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण अकेला हो, उसका घर वह माध्यम होना चाहिए जिसके द्वारा मसीह संसार को आशीष देता है।

ये अध्ययन इस बात पर जोर देगा कि बहुत दिए गए चार मापदण्डों को हमारे घर कैसे पूरा कर सकते हैं। सफलता मिल सकती है यदि घर के लोग पद 5:22, 23 में बताए आत्मा के फल देने लगे।

आत्मा के विभिन्न फलों की चर्चा और उन्हें घर पर लागू करने से पहले हमें वचन को फिर से पढ़ने पर पूछना चाहिए कि यह हम में से हर किसी के व्यक्तिगत स्वरूप पर कैसे प्रासंगिक है। इस वचन में दो जीवनशैलियां पता चलती हैं, जिनमें एक तो शरीर के अनुसार जीना है और दूसरी आत्मा के साथ जीना है। दोनों जीवनशैलियों में किया गया चयन विवाह को बना या बिगाड़ सकता है।

इस वचन का क्या अर्थ है?

संदर्भ: गलतियों की पुस्तक में पौलुस ने शायद उन झूठे शिक्षकों को डांट लगाई, जो गलातियों की कलीसिया में यह शिक्षा ले आए थे कि अन्य जातियों से मसीही बनने वालों को मसीही बनने के लिए व्यवस्था को, विशेषकर खतने को मानना आवश्यक है।

उस झूठी या गलत डॉक्ट्रिन का जिक्र करते हुए पौलुस ने तर्क दिया कि गलातिया के लोगों को व्यवस्था से स्वतंत्र किया गया था। अब वे मसीह में स्वतंत्र हैं (5:1)। पर पौलुस ने कल्पना की थी कि उसके पाठकों में से कुछ को यह लग सकता है कि वे व्यवस्था से छूट गए है। इस कारण वे जैसे चाहें जी सकते हैं और अब किसी पाबंदी के अधीन नहीं है। पौलुस उन्हें बताना चाहता था कि उनकी स्वतंत्रता का अर्थ बिना रूकावट के नहीं है। वे अपनी स्वतंत्रता को पाप करने का लाइसेंस न मानें (5:13) बल्कि इसके बजाय अपने आपको प्रेम की व्यवस्था से बाधें (5:14)।

आज्ञा हम प्रेम की व्यवस्था से कैसे बंधे हैं? पौलुस की आज्ञाओं से गलातियों के मसीही लोगों को 'आत्मा के अनुसार चलना या जीना' न कि शरीर की लालसा पूरी करना आवश्यक है (5:16)।

झगड़ा आत्मा और शरीर दोनों अभिव्यक्तियां विरोधाभासी नियमों को दर्शाती है। उनमें हमेशा एक-दूसरे के नियमों को लेकर सदा लड़ाई होती रहती है। रोमियों 7:23 में पौलुस ने इसे अंगो में लड़ाई कहा, परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बंधन में डालती है, जो मेरे अंगों में है।

हमें इस गृह युद्ध की दो बातों को समझना आवश्यक है (1) यह मसीही लोगों के लिए चुनौती बनी हुई है। हमें परीक्षा से छूट की उम्मीद केवल इसलिए नहीं करनी चाहिए कि हम मसीही बन गए हैं। फिर भी मसीही होने के नाते हम गैर मसीही लोगों से कहीं बेहतर हैं क्योंकि हमें मसीही जीवन जीने में सहायता मिलती है। यह सहायता पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है। (2) नियम अर्थात शरीर बनाम आत्मा तो दोनों के पास होते हैं पर व्यक्ति के जीवन में दोनों में से एक की ओर झुकाव रहता है। प्रभाव के दर्जे हो सकते हैं पर यकनीन एक अधिक प्रमुख होगा। इसलिए यह जाना जा सकता है कि हम शरीर के अनुसार चल रहे हैं या आत्मा के अनुसार।

अन्तर कौन से चिन्ह है जिन से यह होता है? पौलुस ने शरीर की जीवनशैली और आत्मा की जीवनशैली में अंतर किया।

संख्या में अंतर है। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि शरीर की जीवनशैली की पहचान शरीर के (गलातियों 5:19) कामों (बहुवचन) से होती है जबकि आत्मा की जीवनशैली की

पहचान आत्मा का फल (एकवचन) होती है। पौलुस द्वारा दी गई नौ आत्मिक विशेषताएं आत्मा के फल नहीं बल्कि आत्मा के फल के विभिन्न पहलू हैं। शायद पौलुस इसकी पूर्णता पर जोर देना चाहता है। वह कह रहा है कि हर मसीही को अपने जीवन में इन सभी गुणों को रखना आवश्यक है, और जिसमें इन गुणों की कमी है, बल्कि आत्मा के फल देने से रह गया है।

दोनों जीवनशैलियों के प्रारंभ में अंतर है। शरीर की जीवनशैली का आरंभ कहां हुआ? शरीर के साथ। अन्य शब्दों में इस जीवनशैली का आरंभ हमारे साथ होता है, हमें शरीर की पूरी जिम्मेदारी को मान लेना आवश्यक है।

आत्मा की जीवनशैली कहां से आई? पवित्र आत्मा से। यह जीवनशैली स्वर्गीय है।

पवित्र आत्मा यह फल कैसे देता है, वह हमारे जीवनों में आश्चर्यकर्म के द्वारा फल नहीं। आश्चर्यकर्मों का यह दौर (जिस प्रकार नये नियम के समय में होते थे) बीत चुका है। इसके बजाय पवित्र आत्मा आज हमारे जीवनों में दो प्रकार से फल देता है। पहला वह हम में वास करता है और परमेश्वर की इच्छा के आगे सम्पर्ण करते हुए हमें आत्मिक रूप में बढ़ने में सहायता करता है। वह परमेश्वर के वचन के द्वारा जिसकी उसने प्रेरणा दी, हमें प्रभावित करते है, हमारे जीवनों में फल लाता है। इन दोनों विचारों में कोई झगड़ा नहीं है। परमेश्वर के विचारों को पढ़ने और उसकी बात मानने की खोज करने पर हम पवित्र आत्मा से और प्रभावित होते हैं, और आत्मिक रूप में बढ़ते हैं। इसके साथ पवित्र आत्मा हमें मजबूत बनाता और प्रोत्साहित करता और उपाय करके हमें भी बढ़ने के योग्य बनाता है। आत्मिक रूप में बढ़ने पर बढ़ना जारी रखते हुए हम परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन की ओर, बढ़ते हैं और इसकी आज्ञा मानकर आत्मिक रूप में बढ़ते रहते हैं। फिर हम देखते हैं कि वचन का प्रभाव हमें मजबूत करने और हमारे अन्दर आत्मा को हमें मजबूत करने के योग्य बनाता है और हमारे अन्दर वास करने वाला आत्मा परमेश्वर के वचन की ओर निरन्तर मुड़ने की ओर प्रोत्साहित करता है।

ध्यान देने वाली शायद सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि पवित्र आत्मा बिना हमारे सहयोग के यह फल नहीं देता। हम फल देने में निष्क्रिय नहीं है। पौलुस ने हमें आत्मा के अनुसार चलने की आज्ञा दी (5:16, 25)। चलना हमें ही है। आत्मा सचमुच फल देता है, पर हमारे जीवनों में वह तभी फल देता है जब हम उसे अपनी ओर प्रभावित होने देते हैं।

दोनों जीवन शैलियों की विशेषताओं में अन्तर है। पौलुस ने पहले शारीरिक जीवनशैली का विवरण दिया (5:19-21)। शरीर के कामों को पांच शीर्षकों में संक्षिप्त किया जा सकता है (1) कामुकता के पाप (2) बनावटी धर्म के पाप (3) सोच के पाप (4) फूट के पाप, (5) असंयम के पाप।

पौलुस किसकी बात कर रहा था? सांसारिक व्यक्ति की; यह निष्कर्ष निकालने से पहले कि ऐसी सूची में हमारा या हमारे किसी जानकार का काम हो सकता है, इन विशेषताओं पर विचार करते हैं तो एक बार इस प्रकार की बात करते हैं-

मतवालेपन पर - मैं इतनी नहीं पीता। कभी-कभी पी लेता हूं पर मैं रोज का आदी नहीं हूं।

स्वाद, झगड़े या डाह पर - मैं हमेशा अपनी बात मनवाने पर जोर नहीं देता, पर मैं किसी को अपना नज़ायज फायदा नहीं उठाने दूंगा। मैं अपना हक चाहता हूं।

झगड़ा मैंने नहीं बढ़ाया शुरूआत उसी ने की थी।

घृणा डाह या क्रोध पर – जब उसने मेरे साथ यह किया तो मैंने उसे वही बताया जो मुझे लगता था। अब वह मेरे साथ दोबारा ऐसा कभी नहीं करेगा। वे लोग इधर क्यों है? मैं उन्हें सहन नहीं कर सकता।

बनावटी धर्म पर – मुझे चर्च जाने की आवश्यकता नहीं है; धर्म के बारे में मेरा अपना दृष्टिकोण है। व्यक्ति का अपना जीवन सही होना चाहिए वह स्वर्ग में ही जाएगा।

व्यभिचार या कुआरों के शारीरिक संबंध पर– असयंमी नहीं होना चाहिए पर विवाह के बाहर किसी के साथ शारीरिक संबंध बनाने में कोई बुराई नहीं है यदि आप सचमुच उसे प्रेम करते हैं, अश्लील चित्रो में क्या बुराई है? इससे किसी को परेशानी नहीं होती।

जब हम ऐसी बातें सुनतें या ऐसी बातें करते हैं तो यह शारीरिक जीवन का प्रमाण है। ऐसी बातों में दिखाया गया व्यवहार वास्तव में औसत सांसारिक व्यक्ति संसार का जन की विशेषता है। हम सब को ऐसी विशेषताओं को बढ़ावा देने से रोकने के लिए कोशिश करनी आवश्यक है।

इसके विपरीत आत्मा की जीवनशैली की विशेषताएं प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा भलाई, विश्वास नम्रता और संयम है। (5:22, 23) सांसारिक व्यक्ति की शारीरिक पहचान के कामों की तरह ही आत्मा के फल उस व्यक्ति के स्वभाव को दिखाते हैं, जो आत्मा के प्रभाव में है। इस फल को देने वाला मसीही व्यक्ति प्रेमी और आनन्द से भरा, शांत और धीरज वाला, कृपालु और भला, विश्वासी और नम्र तथा संयमी होता है।

दोनों जीवनशैलियों के परिणामों में भी अंतर है। शरीर के काम करने वाले लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं है। (5:21) पौलुस राज्य के अनन्त चरण की बात कर रहा था (देखें 2 पतरस 1:11); अन्य शब्दों में बिना मन फिराए इस जीवनशैली को अपनाने वाले स्वर्ग में नहीं जा सकते, इसलिए इसका अर्थ यह है कि आत्मा के अनुसार चलने वाले ही उस अनन्त राज्य का आनन्द लेंगे। पौलुस ने कहा कि आत्मा का फल के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है। उसके कहने का अर्थ था कि इस फल को देने वालों के लिए कभी कोई दण्ड नहीं ठहराया गया यानी इन कामों को करने वालों के लिए किसी दण्ड की आवश्यकता नहीं। जिस जीवनशैली को हम चुनते हैं उसी से तय होगा कि हम अनन्तकाल का समय कहां बिताएंगे।

यह वचन घर पर कैसे लागू होता है?

इस वचन को घर में लोगों के चरित्र के महत्व पर जोर देने के लिए इस्तेमाल करके घर पर लागू किया जा सकता है। मसीही घर कैसे बनता है? मसीही यानी वे लोग जो मसीही बन गए हैं, जिनमें सचमुच में पवित्र आत्मा का वास है। सबसे सफल घर उन्हीं लोगों से बनते हैं, जो अपने जीवनों में पवित्र आत्मा को फल देने की अनुमति देकर, वैसे रहते हैं, जैसे मसीही लोगों को रहना चाहिए।

हमें नाम के ही नहीं, बल्कि जीवनशैली में भी मसीही होना चाहिए। पौलुस ने 5:25 में इस बात को समझाया: यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो आत्मा के द्वारा चलें भी? क्या हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं? क्योंकि आत्मा ने हमें जीवित किया है। हम पवित्र आत्मा के हमारे लिए किए गए काम के कारण मसीही है, तो फिर क्यों न आत्मा के द्वारा चले। यदि हम मसीही हैं तो हम वैसे ही काम भी करें।

हमारे आत्मा का फल देने या इसे न दे पाने से हमारे घरों पर क्या प्रभाव होगा? अपने अध्ययन के आरंभ में हमने कहा था कि शरीर और आत्मा की जीवनशैलियां या तो विवाह को बना सकती है या तोड़ सकती है। वे पति या पत्नी दोनों में से किसी एक के व्यभिचार

करने, डाह रखने वाले होने या शराबी, स्वार्थी या शरीर के अन्य कामों का दोषी होने पर विवाह टूट सकता है। दूसरी ओर आत्मा का फल विवाह को मजबूत बना सकता है, यदि पति की जीवनशैली शरीर के कामों के बजाय आत्मा के कामों से पहचानी जाती है, तो विवाह टिका रहेगा। यदि पत्नी की जीवनशैली से आत्मा के फल की झलक मिलती है तो विवाह बना रहेगा।

सफल विवाह या प्रसन्न घर की कुंजी हम है। हम में से हर एक को पूछना चाहिए, मैंने अपने जीवन में कौन सी जीवनशैली अपनाई है।

परमेश्वर पिता

जेम्स ई. प्रीस्ट

परमेश्वर का अर्थ है आत्मा। यूनानी भाषा में आत्मा अलिंगी है। जिसका अर्थ यह है कि इस शब्द के गुण न तो नर हैं और न ही मादा। यीशु ने कहा था कि हमें आत्मा से (बिना लिंग विचार के) से आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना 4:24)। इसमें हमें बपतिस्मा लेने वालों के बारे में पौलुस की एक महान पुष्टि का स्मरण आता है, अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास, न स्वतंत्र न कोई नर, न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलतियों 3:28)।

लिंग अर्थात नर और मादा के विचार को शामिल किए बिना बात करनी थोड़ी अजीब लग सकती है। परन्तु यूनानी सहित बहुत सी भाषाओं में ऐसा होता है।

फिर हम परमेश्वर को पिता कैसे कहते हैं? इसका उत्तर दो तरह से दिया जा सकता है।

एक अनादि पिता

हम सीधे ही परमेश्वर के भीतर के आंतरिक संबंधो में चले जाते हैं। यहां पर हमें परमेश्वर के अनिवार्य स्वभाव में अपने प्रश्न का एक उत्तर मिलता है। वह एक त्रिएक परमेश्वर है, जिसका सार आत्मा है, जिसमें तीन व्यक्ति हैं। अनादि परमेश्वर ही अनन्त पिता, अनन्त पुत्र व अनन्त आत्मा है। इसलिए परमेश्वर को पहले पिता के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि पिता के रूप में अपने इकलौते पुत्र (यूहन्ना 3:16) के साथ उसका सदा से सदा तक संबंध है। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा सदा से ही हैं। परमेश्वर पुत्र को रचा नहीं गया। परमेश्वर आत्मा परमेश्वर पिता की ओर से आता है और उसे परमेश्वर पुत्र द्वारा भेजा जाता है (यूहन्ना 15:26)।

इस सबका अर्थ यह है कि पूरे अनन्तकाल में ऐसा कोई अवसर नहीं आया जब कुछ बनाने चमत्कार करने के लिए परमेश्वर को किसी मादा साथी की आवश्यकता पड़ी हो। ऐसी अनुचित धारणाओं का आधार मूर्तिपूजा तथा ग़लत धारणाएं होता है। पुराने नियम में कनानियों के संतान देने वाले नर तथा मादा देवताओं के विरोध में नियम था।

फिर परमेश्वर को पिता कैसे कहा जा सकता है? हम उसे पिता इसलिए कहते हैं क्योंकि परमेश्वरत्व में आत्मिक स्वभाव के द्वारा वह अनादि पिता है। जैसे सार में वह आत्मा है, वैसे ही व्यक्ति में वह पिता है।

एक सृजनात्मक पिता

परमेश्वर के पिता होने के प्रश्न की खोज के लिए हमारी दूसरी दिशा परमेश्वरत्व के

आंतरिक स्वभाव के बाहर चली जाती है। आगे बढ़ते हुए, हमें ध्यान में रखना चाहिए कि यद्यपि त्रिएकत्व में व्यक्तियों में भिन्नता दिखाई देती है, परन्तु जो कुछ उन्होंने किया है और जो वे कर रहे हैं उस सब के उनके कार्य में एकता स्पष्ट दिखाई देती है। हमारी इस बात को तीन उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इसमें सृष्टि पहला उदाहरण है (उत्पत्ति 1:1, 2; यूहन्ना 1:1-3; इब्रानियों 1:1-3)। यह सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम है। प्रकाशन दूसरा उदाहरण है (गलतियों 1:12; इफिसियों 3:2-6)। यह भी सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम है। प्रायश्चित तीसरा उदाहरण है। इसमें भी पूर्ण परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम हैं (इब्रानियों 9:14; 10:3-10)।

उदाहरण और भी दिए जा सकते थे, परन्तु यह दिखाने के लिए कि अपने सारे काम में परमेश्वर पूरी तरह लगा हुआ है, इतना ही काफी है। सृष्टि प्रकाशन तथा प्रायशिचत में अकेला पिता परमेश्वर ही नहीं है। इन कामों में इन तीनों की अलग-अलग भूमिकाएं किसी भी प्रकार काम में उनकी एकता को व्यर्थ नहीं करती, बल्कि उसका दायरा बढ़ा देती है। उदाहरण के लिए छुटकारे की समस्त योजना में, परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को संसार के पापों के लिए क्रूस पर मरने के लिए भेज दिया। परन्तु परमेश्वर पिता क्रूस पर नहीं मरा, न ही उसने क्रूस का कष्ट सहा। परमेश्वर पिता ने हमारे लिए परमेश्वर पुत्र को मरने के लिए भेज दिया। पुत्र के गाड़े जाने व पुनरुत्थान के बाद परमेश्वर पिता ने उसे अपने दाहिने हाथ बिठाकर सारा अधिकार व शक्ति दे दी (मत्ती 28:18; यूहन्ना 3:16; प्रेरितों 2:23-33)। परमेश्वरत्व के स्वभाव के भीतर परमेश्वर के कामों के बिना पिता के रूप में परमेश्वर के बारे में क्या निष्कर्ष निकलता है? वह किसी से शारीरिक संबंध बनाने या अपने पौरुष के कारण नहीं बल्कि अपने ईश्वरीय स्वभाव से अनादि पिता कहलाता है। सृष्टि का उसका कार्य केवल परमेश्वर पिता का ही नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से परमेश्वर का है। फिर, स्वीकरण योगदान से हम पाते हैं कि वह मनुष्य जाति के मामलों तथा भविष्य में भी विलक्षण भूमिका निभाता है।

इसके प्रकाश में यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के लिए पिता शब्द यह प्रमाण नहीं है कि पुराने समय के लोग उसके प्रति अधिक निष्ठा रखते थे। जैसे हमने पहले ही कहा है, मूर्तिपूजक समाजों में आम तौर पर अपने देवताओं को नर तथा मादा के रूप में देखा जाता था। यदि सभी नहीं, तो उनकी अधिकतर पूजा पद्धति प्रजनन क्षमता के संस्कार ही होते थे। कई बार इन रीतियों से इस्राएली लोग भी आकर्षित हुए जैसा कि बार-बार पुराने नियम में दिखाया गया है। आखिर, उनका परमेश्वर तो अपने आस-पास के लोगों में दिखाई देने वाले भिन्न-भिन्न देवताओं की तुलना में अदृश्य और कठोर था।

इसलिए यह दावा करना गलत है कि अपने परमेश्वर को पिता कहकर इस्राएली किसी न किसी तरह समयों की गति को दिखाते थे। वह ही सच्चा और जीवता परमेश्वर है। हे इस्राएल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। (व्यवस्थाविवरण 6:4) इस्राएलियों के लिए कोई बहुदेववाद नहीं था, न ही कोई देवी मां थी। उन पर ये निषेध व्यवस्था से लगाए गए थे। अन्य जातियों के धार्मिक सम्मेलनों में नर तथा मादा देवताओं की मांग की जाती थी, परन्तु इस्राएल के प्रकट धर्म में नहीं। वास्तव में, सम्पूर्ण इब्रानी बाइबल में देवी के लिए कोई अलग इब्रानी शब्द तक नहीं है। यह दावा कि पुरखाओं की उलझन के कारण परमेश्वर को माता के बजाय पिता कहलाना पड़ा, बाइबल अन्दर तथा बाहर दोनों के प्रमाण की भरमार से दूर है। यह दावा पवित्र शास्त्र के परमेश्वर का सच्चा प्रकाशन होने की यथार्थता का भी इंकार करता है। जब लोग इस आधार पर प्रभु की प्रार्थना समाप्त करने की वकालत करते हैं कि

यह हमारे पिता को सम्बोधित है, तो यह हमारे समय की एक दुखद व्याख्या है, बाइबल के समय की नहीं।

एक विश्वव्यापी पिता

हम पहले ही अनन्त त्रिएकत्व में मनुष्यों के साथ संबंध के बारे में पिता के रूप में परमेश्वर की बात कर चुके हैं। अब परमेश्वर के पिता होने के रूप में विचार करते हुए, हम परमेश्वर के अपने लोगों को व्यापक ऐतिहासिक प्रकाशन अर्थात बाइबल पर ध्यान देते हैं। यहां हम देखते हैं कि परमेश्वर तीन अलग-अलग ढंग से पिता के रूप में प्रकट होता है। ये तीनों ही महत्वपूर्ण है अर्थात सबका अपना-अपना महत्व है।

पहले ढंग में हम देखते हैं कि अपनी सृष्टि के द्वारा परमेश्वर विश्वव्यापी पिता है। हम देख चुके हैं कि त्रिएकत्व के इन तीनों व्यक्तियों का योगदान सृष्टि की रचना में है, इसलिए अब स्वीकरण के द्वारा हमें स्मरण दिलाया जाता है कि सृष्टि में पिता की भूमिका पर जोर दिया गया है। (इसी प्रकार से ये तीनों व्यक्ति छुटकारे के सम्पूर्ण कार्य में लगे हुए हैं, परन्तु छुटकारा दिलाने वाले की भूमिका के उसके अपने स्वीकरण में हम परमेश्वर पुत्र को छुटकारे का दाम चुकाते हुए देखते हैं) सृष्टि से परमेश्वर का पिता वाला संबंध उसके रचनात्मक कार्य से बनता है। सृष्टि के सिरताज के रूप में मनुष्य जाति को देखा जाता है अर्थात उसे सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि मनुष्य जाति में ही परमेश्वर का स्वरूप तथा उसकी समानता डाली गई है (उत्पत्ति 1:26, 27)।

परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य में दिखाई गई सामर्थ से अपनी सारी सृष्टि पर उसके प्रभुत्व का आश्वासन मिलता है। बाइबल के बहुत से पद सृजनहार अर्थात पिता और सामर्थ अर्थात प्रभु के इस मेल की झलक देते हैं। वे परमेश्वर के विश्वव्यापी पिता होने और उसकी सृष्टि में निकट संबंध होने का दावा करते हैं।

जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है, और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है।

यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है (भजन संहिता 103:13, 14, 19)।

अपनी सृष्टि पर शासन करते हुए मनुष्य के प्रति अपनी दयालुता में परमेश्वर पिता है। पौलुस ने अथेने में अरियुपगुस की सभा में मूर्तिपूजक दार्शनिकों को संबोधित करते हुए परमेश्वर को विश्वव्यापी पिता के रूप में दिखाया था। उसने उनके ही एक कवि को उद्धृत किया था जिसने परमेश्वर के लिए कहा था, हम उसी में जीवित रहते और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं। (देखिए प्रेरितों 17:24-29, विशेषकर 28)। यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो वह हमारा पिता है। यह बात सब लोगों पर लागू होती है। इस प्रकार सृष्टि के द्वारा परमेश्वर सबका विश्वव्यापी पिता है।

आदम की रेखा के बारे में पढ़ना दिलचस्प है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया, उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की ओर उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम (अर्थात मनुष्य) रखा (उत्पत्ति 5:1ख, 2) परन्तु नये नियम में, इस सृष्टि का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा यीशु की (उलटी) वंशावली के अंतिम वाक्य और वह आदम का, और वह परमेश्वर का (पुत्र) के रूप में मिलती है (लूका 3:38ख) आदम (मनुष्य) की सृष्टि में परमेश्वर पिता की भूमिका में मिलता है। पहले आदम का पिता होने के कारण, वह सारी मनुष्यजाति का पिता है।

एक चयनात्मक पिता

अपनी प्रतिज्ञा/वाचा के द्वारा परमेश्वर चयनात्मक पिता भी है। मलाकी की पुस्तक का एक पद परमेश्वर को सृष्टि के द्वारा परमेश्वर के रूप में, विश्वव्यापी पिता के रूप में प्रतिज्ञा/वाचा के द्वारा चयनात्मक पिता के रूप में बदलने को दिखाता है। परमेश्वर ने कहा था कि उसके लोगों के साथ उसकी वाचा जीवन और शांति की वाचा थी। उसने यह भी कहा था तुम लोग धर्म के मार्ग से ही हट गए, तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते। फिर मलाकी ने एक सर्वमान्य सत्य के आधार पर यहूदियों से यह आग्रह किया था। क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हमको उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे का विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की वाचा को तोड़ देते हैं? (मलाकी 2:3-10) मलाकी लोगों के साथ दो शानदार सिद्धांतों के आधार पर तर्क कर रहा था। परमेश्वर पिता है क्योंकि वह सृजनहार है, परमेश्वर इस्राएल का पिता है क्योंकि उनके साथ उसने वाचा बांधी है।

प्रतिज्ञा/वाचा में चयनात्मक पिता के रूप में परमेश्वर पुराने नियम का मुख्य विषय है। हमें इसमें एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देना चाहिए। सृष्टि की रचना के द्वारा विश्वव्यापी पिता के रूप में पाप के कारण परमेश्वर से जुदाई होने तक मनुष्य के लिए अपने साथ पूरी संगति के लिए पर्याप्त आधार था। पाप न करने तक आदम जैसा कि हम देख चुके हैं परमेश्वर का पुत्र था। जब मनुष्य ने पाप किया तो वह परमेश्वर से दूर हो गया था। तब से लेकर पूरे इतिहास में सृष्टि के द्वारा विश्वव्यापी पिता के रूप में परमेश्वर से पूरी संगति के लिए परमेश्वर पर्याप्त आधार नहीं है।

परमेश्वर की पहल पर, इब्राहीम को उसकी सेवा के लिए बुलाया गया और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (उत्पत्ति 12:1-3) और वाचा (उत्पत्ति 17:1, 2) के द्वारा उत्साहित किया गया था। उसके पुत्र इसहाक और उसके पौत्र याकूब (इस्राएल) के साथ भी यही प्रतिज्ञाएं दोहराई गई थी (उत्पत्ति 26:2-5; 35:9-12)। क्या परमेश्वर के ये काम परमेश्वर पिता के काम थे? हां इसमें कोई संदेह नहीं है। अपने लोगों को व्यवस्था देने से भी पहले, सीनै पर्वत से ही, परमेश्वर ने इस्राएल को अपना पहलौठा पुत्र माना था। (निर्गमन 4:22) परमेश्वर द्वारा बुलाए गए लोग यह जानते थे कि वाचा के प्रति उनकी विश्वास्योग्यता के आधार पर उन्हें दूसरे सभी लोगों में से चुना गया था (निर्गमन 19:3-6)।

समय बीतने पर, लोग कनान में प्रवेश कर गए थे। न्यायी उनके अगुवे थे। अनन्त: राजाओं का प्रबंध ठहराया गया। दाऊद और सुलैमान के शासन की शान, ठाठबाट और शक्ति के बीच परमेश्वर ने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह उनका पिता था। परमेश्वर ने दाऊद को उसके पुत्र सुलैमान के विषय में कहा, मैं उसका पिता ठहरूंगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा। (2 शमूएल 7:12-14; देखिए 1 इतिहास 28:4-7)। भजन लिखने वाले दाऊद से संबंधित राज्य, वाचा और दाऊद के परमेश्वर को पिता के रूप में मानने के इन वैभवशाली समयों के संबंध में परमेश्वर की स्तुति गाई। उसने लिखा कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपने संबंध के बारे में क्या कहा था, वह मुझे पुकार कर कहेगा, कि तू मेरा पिता है, मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चट्टान है। फिर मैं उसको अपना पहलौठा ठहराऊंगा (भजन 89:24-29)।

बहुत से भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के साथ उसके चुने हुए लोगों के संबंध को पिता/संतान का संबंध बताया था। आमतौर पर यह डांट लगाने के लिए भी होता था जब लोग परमेश्वर अर्थात अपने पिता के प्रति वफादार नहीं होते थे। एक बार, जब वे शिकायत कर रहे थे और फारसी राजा कुप्रुस का इस्तेमाल करके उन्हें निकाल लाने के परमेश्वर के ढंग

पर संदेह कर रहे थे, तो यशायाह के द्वारा उसका तीव्र उत्तर था, हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, तू क्या जन्माता है? और मां से कहे, तू किसकी माता है? (यशायाह 45:9-11) (दिलचस्प बात यह है कि ऐसे ही एक कारण के लिए रोमियों 7:14-24 में पौलुस ने इस पद का इस्तेमाल किया था)।

पद दिखाते हैं कि चयनात्मक पिता के रूप में अपने लोगों से परमेश्वर के संबंध में उसका उन पर प्रभु होना और उनका उसके सेवक होना शामिल है। उसके लोगों द्वारा मूर्तिपूजक होते देखना परमेश्वर को अच्छा नहीं लगता था। तू मेरा पिता और पत्थर से तू ने मुझे जन्माया है। कहना शर्म की बात थी (यिर्मयाह 2:26-28)। उसकी इच्छा के प्रति उनके विद्रोह और अविश्वास को पिता के रूप में सेनाओं के प्रभु का आदर माना गया प्रभु के रूप में उसका कोई भय नहीं माना जाता (मलाकी 1:6)।

कुल मिलाकर भविष्यवक्ता यह प्रचार करते रहे कि केवल परमेश्वर ही उनके पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर था। वह अपने चुने हुए लोगों का पिता है, केवल वह ही एकमात्र जीवित परमेश्वर है जिस पर वे निर्भर हो सकते हैं, निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि इब्राहीम हमें नहीं पहचानता और इस्राएल हमें ग्रहण नहीं करता, तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ाने वाला है, प्रचीनकाल से यह तेरा नाम है (यशायाह 63:16)। उन्होंने यह भी माना तौभी, हे यहोवा तू हमारा पिता है, देख, हम तो मिट्‌टी है, और तू हमारा कुम्हार है। हम सब के साथ तेरे हाथ के काम है। (यशायाह 64:8)।

अकाल, मरी, दण्ड, विद्रोह, दासता, मूर्तिपूजा, युद्ध आदि के बावजूद जो इस्राएल के इतिहास की स्मरणीय घटना थी, परमेश्वर ने जो कि चुनने वाला पिता है हमेशा अपने आपको उनके पिता के रूप में माना (यिर्मयाह 31:9घ)। वह अपनी प्रतिज्ञा/वाचा पर स्थिर रहा और अपने प्रिय बच्चों को क्षमा करता रहा। पुराने नियम के हृदय विचारक पदों में से एक अपने भटके हुए बच्चों के लिए बदले में परमेश्वर का प्रेम देने का वर्णन करता है।

जब इस्राएल बालक था, तब मैंने उसे प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे, वे बाल देवताओं के लिए बलिदान करते और खुदी हुई मूरतों के लिए धूप जलाते गए। मैं ही एप्रैम को पांव-पांव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था, परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करने वाला मैं हूं। मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैंने उन से किया (होशे 11:1-4)।

पहुनाई करना: एक मसीही सेवा

सूज़ी फ्रैड्रिक

मसीही स्त्रीयाँ होते हुए कई बार हम ऐसा अनुभव करते हैं, कि परमेश्वर की सेवा करने में हम बहुत सीमित हैं। जहां पर पुरुष लोग उपस्थित होते हैं वहां हम प्रार्थना में अगुवाई नहीं कर सकते, प्रचार नहीं कर सकते या किसी भी रूप में अगुवाई नहीं कर सकते। (1 तीमुथियुस 2:11-12; 1 कुरि. 14:34)। परन्तु पहुनाई (अतिथी सत्कार) करने में हम बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। मसीहीयों को यह आज्ञा दी गई है कि वह पहुनाई करने वाले हो, "परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो। पहुनाई करने में लगे रहो।" (रोमियों 12:10, 13)। जो लोग परमेश्वर की सेवा करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि मसीही लोगों की

पहुनाई करना एक अच्छे सुअवसर की बात होती है। मसीहीयों को अपने घरों में ठहराना तथा उन्हें भोजन खिलाना एक बहुत ही अच्छी और आशीष की बात है। कई बार प्रचारकों तथा बाइबल को सिखाने वाले अगुवों की पहुनाई करने के द्वारा हम सुसमाचार फैलाने में अपना योगदान देते हैं (मत्ती 10:41)। पहुनाई करने में कई बार अजनबी भी हो सकते हैं तथा कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिन्हें हम जानते हैं। परन्तु इस बात का ध्यान रखें कि ऐसा करने में झूठे प्रचारकों की सहायता न करें। अनुचित शिक्षाओं का प्रचार करने में उनका साथ न दें जिस प्रकार से 2 यूहन्ना 9-11 में लिखा है, ''यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है।'' प्रभु यीशु ने हमें मत्ती 25:35-40 में सिखाया था कि ''मसीहीयों की सहायता करना तथा उनकी पहुनाई करना उसकी सेवा करने के बराबर है।'' आईये पहुनाई करने में पीछे न हटें ताकि हम उन लोगों में शामिल हों जिनसे राजा अर्थात् प्रभु यीशु कहेगा, ''हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।'' (मत्ती 25:34)। बाइबल में लिखी हुई इस बात को याद रखें, ''इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ।'' (गलतियों 6:10)।

मैं मसीह की कलीसिया का सदस्य हूं

क्योंकि इसका विश्वास है कि पूरी बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ वचन है

लियॉय ब्राउनलो

1. सेवकों के प्रतिनिधिक समूह के विचार

एल.आर. विल्सन (फर्म फाउंडेशन, 28 अप्रैल 1942) ने मॉडर्न एटिच्यूड्स टुवर्ड द बाइबल पर एक उपदेश में लिखा है गत वर्ष ही डॉ. क्लेरंस एडवर्ड मैकाटनी ने प्रीचिंग टुडे नामक एक पत्रिका में द ग्लोरियस गॉस्पल पर एक प्रवचन पर आंकड़े दिए (बैटस से विलीफ्स ऑफ 700 मिनिस्टर्स के शीर्षक से अबिंग्टन प्रैस के एक प्रकाशन) जिसमें यह परिणाम दिखाए गए तेरह प्रतिशत लोगों ने त्रिएकता की शिक्षा को नकार दिया, चालीस प्रतिशत ने सृष्टि के बाइबल के विवरण को नकारा, तीस प्रतिशत नहीं मानते कि शैतान है; अठत्तीस प्रतिशत लोग परमेश्वर की ओर से प्रकाशन में विश्वास नहीं रखते. तैंतालीस प्रतिशत लोगों ने पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से होने को नकारा अठत्तीस प्रतिशत पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को नहीं मानते, जो भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी कर सके थे, पचपन प्रतिशत लोग बाइबल को पूरी तरह से मिथ्या तथा दंत कथाओं से रहित नहीं मानते, उन्नीस प्रतिशत लोग यीशु के देहधारी होने के वृत्तांत को नकारते है, उन्नीस प्रतिशत को यह विश्वास नहीं है कि यीशु परमेश्वर के तुल्य है, चौबिस प्रतिशत लोग मसीह के पाप का प्रायश्चित होने को नकारते हैं, बारह प्रतिशत मसीह के पुनरुत्थान को नकारते हैं, चौंतीस प्रतिशत लोगों को दुष्टों को भविष्य में मिलने वाले दण्ड में विश्वास नहीं रहा, तैंतीस प्रतिशत का देह के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं है; सत्ताइस प्रतिशत यह विश्वास नहीं करते कि यीशु जीवते और मरे हुओं का न्याय करने के लिए फिर आएगा, तैंतीस प्रतिशत उत्पत्ति की पुस्तक से संबंधित मनुष्य के पाप में गिरने को नहीं मानते, इक्वान प्रतिशत लोग बपतिस्मे तथा प्रभु भोज को अनावश्यक मानते हैं और उन्तालीस प्रतिशत का विचार है कि भले लोगों को कलीसिया में

स्वीकार कर लेना चाहिए, चाहे उद्धार के बारे में उनका विश्वास कुछ भी हो।

2. आश्चर्य की बात है कि इतने लोगों का विश्वास नहीं है कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से और परमेश्वर का अधिकारात्म्क वचन है, इसलिए परमेश्वर कई विषयों पर क्या कहता है, वे उस पर विश्वास नहीं करते। नास्तिक व्यक्ति आधुनिक व्यक्ति से बहुत अलग है, नास्तिक का बाइबल में किसी प्रकार का विश्वास नहीं है जबकि आधुनिकवादी उसकी उन बातों में विश्वास कर लेता है जो उसे पसंद हैं।

2. बाइबल पर विश्वास करने के कारण

बाइबल पर विश्वास करने के कई कारणों में से कुछ विचार करे:

1. यदि बाइबल सच्ची नहीं है तो इतिहास भी न तो स्वीकार करने योग्य है और न भरोसे के योग्य किसी अन्य इतिहास में सच्चाई और विश्वसनीयता वाली ऐसी विशेषताएं नहीं है। बाइबल में प्रामाणिक होने का हर एक चिन्ह है। मसीह के बारे में कहा गया था, जिसे हमने सुना और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा, और हाथों से छुआ (1 यूहन्ना 1:1) यह प्रमाण लोगों से सुना नहीं है बल्कि उन्होंने मसीह को देखा, सुना और छुआ था और ज्ञान के दृष्टिकोण से यह मानने के योग्य है। इस तथ्य को कि उन्होंने मसीह को सुना, देखा और छुआ केवल यह मानकर ठुकराया नहीं जा सकता कि उनकी नजर या सुनने की शक्ति या स्पर्श करने की शक्ति कमजोर थी। उनकी गवाही ईमानदारी तथा सच्चाई के दृष्टिकोण भी मानने के योग्य है। उनकी गंभीरता पर झूठी गवाही होने या स्नेहास्पद होने का आरोप लगाना हास्यास्पद है। यह गवाही देने से उन्हें किसी प्रकार का भौतिक या अस्थाई लाभ नहीं मिला था। इससे उनके मित्र, घर और आसान जीवन छूट गया था, क्योंकि इसके लिए उन्हें सताव तथा मृत्यु सहनी पड़ी थी। यह कहना असंगत है कि लोग किसी ऐसी बात के लिए मर गए जिसे वे जानते थे कि झूठ है। उनके जैसी निष्कपटता का प्रमाण किसी इतिहासकार ने कभी नहीं दिया है। यदि बाइबल सच्ची नहीं है, तो और कोई इतिहास नहीं है जिसे हम मान्यता दे। कलाओं में अप्रशिक्षित अलग-अलग समयों तथा स्थानों में रहने वाले लोगों द्वारा आपस में इतनी सहमत सच्चाइयों को बुनने वाले स्वर्ग में नहीं तो और कहां से ऐसा कर सकते थे, या वे सब झूठ बनाकर धोख कैसे दे सकते थे या उन्हें क्या आवश्यकता थी कि पीड़ाएं सहकर, लोगों ने उनकी सलाह की कदर न की बदले में उन्हें भूख मिली और इसका दाम उन्हें शहादत देकर चुकाना पड़ा?

2. पुस्तकों की पुस्तक, छियासठ पुस्तकों वाली तालमेल और विचार में एक, लगभग सोलह शताब्दियों के समय में लगभग चालीस अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखी गई बाइबल संयोग से नहीं लिखी जा सकती थी। ये लोग इतिहास के अलग-अलग कालों में रहते थे, अलग-अलग व्यवसाय करत थे, और अलग-अलग रीतिरिवाजों प्रबंधनों और भौगोलिक स्थानों में रहते थे। वे अलग-अलग समयों और अलग-अलग भागों में रहते थे और सबने बिना एक दूसरे की सलाह से लिखा। इसलिए उनके लिए एक पवित्र धोखा लिखने के लिए षड्यंत्र रचना असंभव था। पर जब उनके लेखों को इक्ट्ठा किया गया, तो आरंभ से लेकर अंत तक विचार का तालमेल और निरंतरता वाली सबसे बड़ी किताब बन गई। यह संयोग से नहीं हो सकता था। इसके लिए योजना और कार्य करने के लिए ऊपरी सामर्थ वाले अतिमान तथा परमेश्वर का योगदान होना आवश्यक है। हम तर्क दे सकते हैं कि सैंकड़ों कर्मियों तथा निर्माण करने वालों ने उसी की योजना के अनुसार काम किया; और बिना एक-दूसरे से सलाह लिए पहले से बनाई योजना के उनकी सारी सामग्री और प्रयासों के एंपायरों स्टेट बिल्डिंग वैसे ही बन गई, जैसे बाइबल संयोग से बनी है।

3. अलग-अलग व्यवसायों, प्राप्तियों तथा योग्यताओं वाले लोगों द्वारा इतनी शानदार और तालमेल रखने वाली पुस्तक लिखना इस बात का प्रमाण है कि ये लोग पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (2 पतरस 1:21)। उदाहरण के लिए, मूसा ने मिस्रियों की बुद्धि से शिक्षा पाई थी और वह एक चरवाहा तथा अगुवा था, यहोशु एक सिपाही और जासूस था, राजा एक प्रसिद्ध लेखक और

परमेश्वर का भय रखने वाला याजक था; नहेमायाह, राज का साकी था, दाऊद चरवाहा, संगीतकार युद्धनायक, और राजा था, सुलैमान संसार का सबसे बुद्धिमान और शक्तिशाली राजा था, यशायाह भविष्यवक्ता, यहेजकेल एक यहूदी निर्वासित दानिय्येल एक राजनयिक आमोस एक चरवाहा व किसान, मत्ती चुंगी लेने वाला पतरस और यूहन्ना मछुअरे अनपढ़ और अज्ञानी पुरुष थे लूका एक वैद्य और पौलुस तम्बू बनाने वाला और गमलियल के चरणों में शिक्षा पाया हुआ एक विद्धान था। बाइबल से बाहर के लोग जिनमें इतने व्यापक कार्य और कुशलताएं हो, ऐसी पुस्तक नहीं लिख सकते थे जो पूरी मिठास वाला छत्ता हर प्रकार के हथियारों का भण्डार संसार के बेशकीमती जवाहरातों वाला मुम्बद, सब रोशनियों को जलाने वाला दीपक प्रताप और महिमा का घर, ऐसा सोपान जिस पर स्वर्ग पृथ्वी को चूमने के लिए झुकता है। ऐसी किताब जिस पर संदेह तो कई बार किया गया पर यह झूठी कभी नहीं ठहरी। ऐसा काम संयोग से नहीं हो सकता था। यह परमेश्वर का ही काम है।

4. यदि बाइबल सच्ची नहीं है, तो सच्चाई से बढ़कर यह झूठ भी संसार के लिए उपयोगी है। यदि यह सच्ची नहीं है झूठी है तो भी इसने मनुष्य को ऊंचा उठाने और संसार को आशीष देने के लिए जो काम किया है वह नास्तिकों संदेहवादियों, अज्ञेयवादियों देववादियों बड़े-बड़े आलोचकों और अद्वैतवादियों के कुल काम से भी अधिक है। बाइबल हमेशा से वह कुल्हाड़ी रही है जिसने सभ्यता की उन्नति के लिए रास्ता साफ किया है। इसमें मनुष्य के स्वभाव को पवित्र करने का प्रभाव है। सहानुभूति रखने वाले धार्मिक और भाईचारा रखने वाले लोग इसे सच्चाई के रूप में अपनाते है। इसलिए, यदि बाइबल सच्ची नहीं है तो संसार के लिए सच्चाई से भी अधिक यह झूठ ही उपयोगी है।

5. यदि बाइबल सच्ची नहीं है, तो प्रकृति व्यर्थ में काम करती है। पृथ्वी रहने वालों में जीवों की एक ऐसी श्रेणी है जिनकी सृष्टि तथा सुविधा के लिए दूसरे सभी जीवों का अस्तित्व है। जीवों की उस श्रेणी को मनुष्य कहते हैं... यदि वह खो जाए यानी सदा के लिए नाश हो जाए, तो सब कुछ खत्म हो जाएगा। वनस्पति की फसलें पृथ्वी में ही हर साल निकलती हैं, और फिर इसी में समा जाती हैं। पशुओं की प्रजातियां उन्हें खाती और मर जाती हैं। अपने आहार की तरह ही वे भी पृथ्वी को समृद्ध करते हैं। दिनके बाद रात और रात के बाद दिन आता है। वर्ष बतीते जाते हैं पृथ्वी अपनी परिक्रमा करके अपने धुरी पर लौट आती हैं, अपने सभी वासियों को खिलाती और मिट्टी में मिला देती है। मनुष्य और उसका आहार भी सदा के लिए उसमें मिल जाते है। इस पूरी प्रक्रिया में क्या प्राप्त हुआ? यदि मनुष्य फिर से जीवित नहीं होता है- यदि बाइबल सच्ची नहीं है, तो प्रकृति व्यर्थ में परिश्रम करती है, और यदि कोई सृष्टिकर्त्ता है, तो वह बिना योजना के काम करता है और उसके परिश्रम का कोई उद्देश्य नहीं है.... फिर यदि बाइबल सच्ची नहीं है- यदि मनुष्य का उसकी सृष्टि का पाप में उसके गिरने का, उसके लिए वापस आने का इतिहास सच्चा नहीं है। एक शब्द में कहीं तो यदि सुसमाचार झूठा है और बाइबल गलत है, तो पृथ्वी पर एक भी व्यक्ति के अस्तित्व का कारण नहीं बताया जा सकता। (क्रिश्चियन बैपटिज्म, कैम्पबैल यदि बाइबल सच्ची नहीं है तो मनुष्य के जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है, तो प्रकृति एक बहुत बड़ी असफलता है, और संसार की योजना एक बड़ी नाकामी।

6. बाइबल की विशेष बात जो अन्य पुस्तकों में नहीं मिलती, यह है कि यह अपनी बात अधिकार से कहती है। यहोवा यों कहता है के शब्द लगभग दो हजार बार इसमें मिलते हैं यह परमेश्वर की ओर से होने का दावा करती है। अपनी बातों को प्रमाणित करने के लिए यह माध्यमों का इस्तेमाल कभी नहीं करती। इसकी बातों परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार से है जिसने इसे दिया है। मानवीय लेखकों की बातें संदेह से भरी और अनिश्चित होती है, पर बाइबल की बातें स्पष्ट और पक्की है। यह तो भविष्य की बात भी उतनी ही स्पष्टता से करती है, जितनी अतीत की बात। यही इसे किसी मनुष्य के काम से अलग करता है।

7. बाइबल मनुष्यों की बनाई पुस्तकों से इस

बात में अलग है कि यह पक्षपातपूर्ण नहीं है। मनुष्य जिसे इसमें सबसे ऊंचे जहाज पर दिखाया गया है, उसे सबसे अंधकारमय पाप करने वाले के रूप में भी बताया गया है। एक उदाहरण के लिए, कहा जाता है कि दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष था, पर उसे एक व्यभिचारी और हत्यारे के रूप में भी दिखाया गया है। जीवनियों में केवल एक पक्ष ही दिखाया जाता है। कोई मित्र है तो उसके पापों को कम करके और उसके गुणों को बढ़ा चढ़ाकर दिखाया जाता है। कोई शत्रु है तो उनमें उसकी कमियों को बढ़ा-चढ़ाकर और उसकी योग्यताओं को कम करके दिखाया जाता है। परन्तु बाइबल की विलक्षण बात यह है कि यह किसी का पक्षपात नहीं करती। यह हर मनुष्य का हर पहलू बताती है। मनुष्यों द्वारा लिखी गई पुस्तकों से यह कितनी अलग है।

8. इसकी भविष्यवाणियों के पूरा होने के कारण बाइबल अवश्य ही परमेश्वर के हाथ का काम है। एक उदाहरण के रूप में हम कई विषयों से संबंधित कई भविष्यवाणियों का इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु मसीह के संबंध में हम कुछ ही पर ध्यान देंगे।

- भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह का जन्म एक कुंवारी से होगा (यशायाह 7:13, 14) यह भविष्यवाणी पूरी हुई (लूका 1:26-35)।
- भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह का जन्म बैतलहम में होगा (मीका 5:2)। ऐसा ही हुआ (मत्ती 2:1-11)।
- भविष्यवाणी की गई थी कि एक अग्रदूत प्रभु का मार्ग तैयार करेगा (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1, 2)। यह बिल्कुल वैसे ही पूरा हुआ (यूहन्ना 1:22, 23; मरकुस 1:1-7)।
- यह भी भविष्यवाणी थी कि यीशु गधे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ वरूशलेम में आएगा (जकर्याह 9:9, 10)। यह पूरा हुआ (मत्ती 21:1-9)?
- भविष्यवाणी की गई थी कि हमारे उद्धारकर्ता को एक प्रिय मित्र द्वारा पकड़वाया जाएगा (भजन संहिता 41:9)। यह भी अब इतिहास है (मरकुस 14:43-49)।
- भविष्यवाणी थी कि उसके पकड़वाए जाने का दाम चांदी के तीस सिक्के होगा ओर पकड़वाने वाला वह धन लौटा देगा (जकर्याह 11:12, 13)। हमें इसके पूरा होने का इतिहास मिलता है (मत्ती 27:3-10)।
- कहा गया था कि उसे कोड़े मारे जाएंगे और ठंडे किए जाएंगे (यशायाह 50:6) अब यह इतिहास की बात है (यूहन्ना 19:1, मरकुस 14:65; मत्ती 27:27-31)।
- यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि यीशु एक भेड़ के मेमने की तरह शांत होकर दुख उठाएगा (यशायाह 53:4-7)। यह भविष्यवाणी पूरी हुई (मरकुस 15:2-5)।
- भजन संहिता 22:18 में मिलता है कि वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते है, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं। यह भी पूरा हुआ (यूहन्ना 19:23, 24)।

मसीहा से संबंधित पूरी होने वाली कई और भविष्यवाणियां बताई जा सकती है, पर इतनी ही काफी है। परन्तु शायद हमें एक और भविष्यवाणी पर ध्यान देना चाहिए, जिसके पूरा होने के हम गवाह है। पौलुस ने भविष्यवाणी की थी कि कुछ लोग विश्वास से भटककर धर्म का एक ऐसा प्रबंध बना लेंगे जिसमें लोगों को विवाह करने की मनाही होगी और उन्हें कुछ भोजनों को खाने से मना किया जाएगा (1 तीमुथियुस 4:1-3)। रोमन कैथोलिक चर्च ने इस भविष्यवाणी को पूरा किया है। वे कुछ लोगों को विवाह करने और अपने सदस्यों को विशेष दिनों और अवसरों पर कुछ भोजन खाने से मना करते हैं। पौलुस को यह कैसे पता चला कि यह ऐसा होगा? एक ही व्याख्या यह है कि उसे पवित्र आत्मा की अगुआई प्राप्त थी। पहले बताई गई सभी घटनाओं का पूरा होने का कोई और कारण नहीं बताया जा सकता।

9. बाइबल के परमेश्वर को प्रेरणा पूरी तरह से पृथ्वी के गोलाकार होने के इसके कथनों से सिद्ध होती है। 1543 में कोपरनिकन थ्यौरी कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी के इर्द-गिर्द घूमती है। पर मनुष्य द्वारा ऐसे स्वप्न लेने से भी सदियों पहले, परमेश्वर के वचन में कह दिया गया था, वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना टेक पृथ्वी को लटकाए

रखता है (अय्यूब 26:7)। किसी वैज्ञानिक ने पृथ्वी की इससे अच्छी व्याख्या कभी नहीं की। यशायाह ने कहा था, यह वह है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है (यशायाह 40:22) इस समय तक किसी मनुष्य ने पृथ्वी के घेरे की बात नहीं की होगी क्योंकि मनुष्यों का विचार था कि यह चपटी है। अपने द्वितीय आगमन की बात करते हुए यीशु कहता है कि वह दिन में और रात में आएगा (लूका 17:31, 34)। बहुत देर तक इस पद को समझना कठिन था। लोग हैरान होते थे कि यीशु दिन में और रात में कैसे आ सकता है। बाइबल के शत्रु यह दावा करते थे कि यह विरोधाभास है। अब यह पद समझना आसान हो गया है क्योंकि मनुष्य को ज्ञात हो चुका है कि पृथ्वी के एक भाग में दिन होता है और दूसरे भाग में रात। इसलिए जब यीशु आएगा, तो वह दिन में और रात में ही आएगा। यह सच्चाई बाइबल में सैंकड़ों वर्ष पहले लिखी गई थी जब मनुष्य ऐसा स्वप्न भी नहीं देख सकता था। इसे क्या कहें, केवल एक ही उत्तर है- लिखने वाले को महान सामर्थ की अगुआई थी।

10. इतिहासकार जोसेफस ने मसीह के बारे में बाइबल की सच्चाइयों की पुष्टि की, इसी समय यीशु एक बुद्धिमान था, अगर उसे ऐसा कहना उचित हो, क्योंकि वह अद्‌भुत काम करने वाला ऐसे लोगों का शिक्षक था जो सच्चाई को आनन्द से ग्रहण करते हैं। उसने अपनी ओर कई यहूदियों और अन्य जातियों को खींचा। वह मसीह ही था और जब हमारे बीच में प्रमुख लोगों के सुझाव से पिलातुस ने उसे क्रूस का दण्ड दिया, तो उससे प्रेम करने वालों ने पहले तो उसे नहीं छोड़ा क्योंकि वह उन्तें तीसरे दिन फिर जीवित दिखाई दिया, जैसा कि परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं द्वारा उसके बारे में ये और हजारों अन्य अद्‌भुत बातें कही गई थी। और मसीही लोग जिन्हें उसी के नाम से जाना जाता है, इस दिन समाप्त नहीं हुए। पुस्तक 18, अध्याय 3। यह प्रसिद्ध इतिहासकार 37 ईस्वी से लगभग 100 ईस्वी के दौरान हुआ है। इस कारण उसके पास मसीह के संबंध में किए गए दावों की जांच करने का पर्याप्त अवसर था। वह मसीही नहीं था। इसलिए वह मसीहित के दावों को साबित करने की कोशिश नहीं कर रहा था; वह तो इतिहासकार था और केवल इतिहास लिख रहा था जो उसे पता चला था जोसेफस कहता है कि यीशु मसीह पृथ्वी पर हुआ है; वह एक बुद्धिमान शक्ति था, अगर उसे ऐसा कहना उचित है; वह अद्‌भुत कामों का करने वाला था; पिलातुस ने उसे क्रूस का दण्ड दिया था, वह तीसरे दिन जी उठा और अपने चेलों को दिखाई दिया था। इस प्रकार एक प्राचीन, गैर मसीही इतिहासकार के लेख नये नियम की इन बातों की पुष्टि करते हैं।

प्राचीन इतिहासकारों प्लाइनी ग्यूस, कुरनेलियुस टेक्टिकुस जैसे अन्य द्वारा भी बाइबल की विश्वसनीयता की पुष्टि होती है। जिसका जन्म पहली शताब्दी के मध्य में और मृत्यु 117 के लगभग हुई छोटा 62 ईस्वी-114।

11. हमारा विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का प्रेरणा से दिया गया वचन है, क्योंकि मनुष्य इसमें सुधार नहीं कर सकता। मनुष्य की लिखी सब बातों में सुधार की गुंजाइश रहती है। विज्ञान, उद्योग, शिक्षा और दूसरे हर क्षेत्र में किए जाने वाले सुधार पर विचार करें। पुरानी पुस्तकें फैंक दी जाती हैं ताकि उनकी जगह नई और सुधरी हुई पुस्तकें ले सकें पर एक पुस्तक जो लगभग 1900 साल पहले सम्पूर्ण हुई, आज भी संसार की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है। यह लगभग कई घरों की शोभा है और इसकी बातें करोड़ों लोगों के होठों पर है। परम्परा ने इसके लिए कब्र खोदी है, शत्रुओं ने इसे जलाने के लिए ढेर सारी लकड़िया लगाई है, कई यहूदियों ने इसे चुम्मे के साथ धोखा दिया है, कई पतरसों ने शपथ खाकर इसका इंकार किया है, कई देमासों ने इसे छोड़ दिया है? पर परमेश्वर का वचन जस का तस है। किसी मनुष्य में इसमें सुधार करने या हमें बेहतर बाइबल देने की योग्यता नहीं है। यह आश्चर्य की बात नहीं है? कदापि नहीं। यह परमेश्वर द्वारा लिखी गई। यह उसकी प्रेरणा द्वारा दिया गया उसका वचन है। (2 तीमु. 3:16-17)। ✝